अमड़ि साईं सनेह जी अमर कहानी, सिय राघव मन भाणीं।

साई चन्द्रमुख अमिड चकोरी, रूप सुधा पिये भावविश भोरी नेह कई आ निमाणी।

> साईंअ कथा सुख सिरता सुहाई मिछलीअ जियां अमां प्रीति लग़ाई रहे रातियां दींह समाणी।

निष्ठा अमिड़ जी चात्रिक वारी, दरस स्वांति जी प्यासिणि भारी सर्वेसु कयो कुलबानी।

> साई सुजसु आ गुलिड़ो मनोहर, अमड़ि मिठीअ जो मनु आ मधुकर

## पी मकरंद मंडरानी।

लोकातर अनुरागु अमड़ि जो, सभिनी खां जिहंजो ऊंचो दरजो लाती लिंव लासानी। रस जे राज जा ब़ई निवासी, सीय रघुवर पद कंज उपासी बृज रज जीवन जानी।

कोकिलि भाव में मगनु रहिन नितु, पार्थिविचन्द्र जे चरणिन में चितु हर्ष में मित हुलिसानी।

वर जे विन्दुर में घड़ियूं सभु घारिनि, साह साह में सिय अमड़ि संभारिनि परा प्रेम रस खानी।

गरीबि श्रीखण्डि सत्य सहेलियूं,

## आर्यिल अमिड जूं अलियूं अलबेलियूं तत् सुख नेह लपटानी।